

मेरा गाँव मेरा गौरव



भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल - 132001, हरियाणा



मेरा गाँव मेरा गौरव



भा.कृ.अनु.प.- भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल



सही दृष्टांत

सत्यवीर सिंह, अनुज कुमार, सेंधिल आर., अनीता मीणा एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह (2016) मेरा गाँव मेरा गौरव, भा.कृ.अनु.प.— भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल —132001 (हरियाणा)

मेरा गाँव मेरा गौरव

संकलन :

सत्यवीर सिंह, अनुज कुमार, अनिल खिप्पल, आर.एस. छोकर, संजय कुमार सिंह, लोकेन्द्र कुमार, राजकुमार, अजय वर्मा, सुधीर कुमार, सुभाष कटारे, अमित कुमार शर्मा, सुभाष चन्द्र गिल, (भा.कृ.अनु.प.— भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा), राजपाल मीना (क्षेत्रीय केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, दालंग मैदान, लाहौल एवं स्पिति, हिमाचल प्रदेश एवं एस.सी. भारद्वाज (क्षेत्रीय केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, फलावरडेल, शिमला, हिमाचल प्रदेश)

संरक्षक एवं प्रकाशक :

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह,
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान,
करनाल —132001 (हरियाणा)

प्रतियां :

500

पृष्ठ :

44

छायाचित्र :

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा

मुद्रक :

श्रीकोशी रेप्रोग्राफिक्स

प्लॉट न. 121, एच.एस.आई.आई.डी.सी

सेक्टर —3, इंडस्ट्रियल एरिया

करनाल—132001, हरियाणा (भारत)

फोन न. 91—9812053552, 8607654545

प्राक्कथन

“मेरा गाँव मेरा गौरव” कार्यक्रम भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक 25 जुलाई, 2015 को शुरू किया गया एक प्रमुख कार्यक्रम है जो कृषि वैज्ञानिकों एवं किसानों के बीच सीधा सम्पर्क स्थापित कर प्रयोग आलाओं में हो रहे अनुसंधान को किसानों तक भीघ पहुँचाने के लिए अग्रसरित रहेगा। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों की आवश्यकतानुसार सूचना, ज्ञान, परामर्श आदि का नियमित रूप से संचार करना है।

भा.कृ.अनु.प.— भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल ने अगस्त, 2015 में परिषद के दिनांक 1 में “मेरा गाँव मेरा गौरव” कार्यक्रम का सूत्रपात किया है। इस कार्यक्रम में चौदह दल बनाए गए हैं जिनमें विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक हैं और कुल 69 गाँवों में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है। गत वर्ष सभी गाँवों से आधारभूत आंकड़े लिए गए, साथ ही कई कृषि विषयों पर जागरूकता अभियान भी चलाया गया। गाँवों से मिट्टी के नमूने एकत्रित किए गए, उनका विश्लेषण कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाए गए तथा 5 दिसम्बर, 2015 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर किसानों को वितरित किए गए। वैज्ञानिकों ने अंगीकृत गाँवों में स्वच्छ भारत अभियान को भी निष्पादित किया और गाँवों के लोगों को जागरूक किया।

यह प्रकार का भा.कृ.अनु.प.—भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा चलाई गई विभिन्न गतिविधियों को दर्शाता है। मैं व्यक्तिगत तौर पर ग्राम पंचायत, सरपंच, प्रगतिशील किसान एवं अन्य नागरिकों का इस कार्यक्रम के संचालन में सहयोग के लिए आभारी हूँ। साथ ही सहयोगी संस्थाओं जैसे—कृषि विज्ञान केन्द्र, राज्य कृषि विभाग, आत्मा, गैर सरकारी संगठन एवं विकास कार्य में लगी अन्य संस्थाओं का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं डॉ. सत्यवीर सिंह (नोडल अधिकारी), विभिन्न वैज्ञानिक दलों के नेताओं एवं वैज्ञानिकों के प्रसंनीय सहयोग की सराहना करता हूँ जिसकी बदौलत हम भारत के प्रधानमंत्री की परिकल्पनाओं को मूर्त रूप दे पाए हैं।

ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

(ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह)

मेरा गाँव मेरा गौरव वैज्ञानिक-कृषक संपर्क की अनूठी पहल

परिचय

किसानों तक वैज्ञानिकों की सीधी पहुँच सुनिश्चित करने के लिए 'मेरा गाँव मेरा गौरव' नामक योजना तैयार की गई है, जिससे 'प्रयोगशाला से खेत' प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए किसानों के साथ वैज्ञानिकों के संपर्क को बढ़ाया जा सके। इस योजना का उद्देश्य प्रत्येक वैज्ञानिक द्वारा एक गाँव की पहचान कर किसानों को नियमित रूप से सूचना, ज्ञान एवं परामर्शी सुविधा प्रदान कर प्रोत्साहित करना है।

भारतीय कृषि में सीमान्त व छोटे कृषकों की सहभागिता कुल कृषि जोत संख्या व क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण है। छोटे किसान सूचनाओं की सामयिक उपलब्धता, कृषि निवेश, ऋण व बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच, बाजार व मूल्यों की जानकारी प्रसार सेवाओं व अन्य प्रदाताओं द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी, अनुसंधान प्रणाली द्वारा विकसित नवीन तकनीकों की उपलब्धता आदि विषयों पर अपनी आवश्यकताओं को विभिन्न मंचों पर रखते रहते हैं।

वर्तमान में भारतीय कृषि परिदृश्य में अनेक एजेंसियाँ और सेवा प्रदाता कार्य कर रहे हैं, जिनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बारे में जानने की जिज्ञासा किसानों में बनी रहती है। अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, निजी कम्पनियों तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा विकसित एवं परिष्कृत प्रौद्योगिकियाँ किसान समुदाय के बीच भिन्न रूप में स्वीकृत व अंगीकृत की जाती हैं। आत्मा, स्वैच्छिक संगठन, कृषि उद्योग और किसान संगठनों आदि द्वारा भी विभिन्न कृषि परामर्शी सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। किसानों के बीच इन संस्थाओं और इनके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाए जाने की जरूरत है ताकि देश के किसान अपनी जरूरतों के अनुसार परामर्श एवं समाधान प्राप्त कर सकें।

प्रक्रिया

'मेरा गाँव मेरा गौरव' योजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक अपनी सुविधानुसार किसी एक गाँव को चयनित कर उस गाँव के संपर्क में बने रहेंगे और किसानों को तकनीकी तथा संबंधित पहलुओं पर सामयिक रूप में जानकारी प्रदान करेंगे। इसके लिए वैज्ञानिक गाँव में दौरा करने के साथ-साथ फोन पर भी किसानों को परामर्शी सेवा प्रदान कर सकते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा गाँव के लिए एक परामर्शदाता की भूमिका निभाने के साथ-साथ किसानों द्वारा कृषि तकनीकों को अपनाए जाने की प्रक्रिया की भी मॉनीटरिंग की जानी अपेक्षित है। वैज्ञानिकों द्वारा सामुदायिक रेडियो स्थानीय समाचार पत्रों, मोबाइल संदेशों, विडियो प्रदर्शनी, स्थानीय मीडिया का प्रयोग कर स्थानीय भाषा में स्थान विशिष्ट परामर्शी सेवाओं के प्रसार हेतु पहल किया जाना अपेक्षित है। इस क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्रों, 'आत्मा' आदि के साथ सहयोग प्राप्त कर उन्नत किस्मों के प्रदर्शन व प्रक्षेत्र भ्रमण आदि का आयोजन करना प्रभावी होगा। वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न उत्पादों के लिए बाजार की जानकारी और बाजार के रुझान के बारे में किसानों को अवगत कराने के साथ-साथ किसानों को कृषि क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं के बारे में अवगत कराया जा सकता है, जिससे किसान अपने क्षेत्र में खेती से जुड़ी समस्याओं के लिए सम्बन्धित संस्था से संपर्क कर सकें। वैज्ञानिकों द्वारा गाँव के किसानों को जलवायु परिवर्तन एवं आवश्यक अनुकूलन रणनीतियों अथवा बचाव उपायों और स्थानीय एवं राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों के बारे में भी जागरूक किया जाएगा। इस सामाजिक विकास की प्रक्रिया में वैज्ञानिकों द्वारा स्थानीय पंचायत, विकास संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों और निजी संगठनों को भी शामिल किया जा सकता है।

इसके साथ ही वैज्ञानिकों द्वारा स्वच्छ कृषि विचारधारा को बढ़ावा दिया जाए और उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पादों के लिए बेहतर कृषि विधियों को अपनाते हुए इसे स्वच्छ भारत अभियान के साथ जोड़ा जा सकता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली के 20,000 वैज्ञानिकों द्वारा गांवों को 'सम्पर्क गाँव' के रूप में चिन्हित कर कार्य किया जाएगा।

गाँव का चयन

प्रत्येक विश्वविद्यालय/संस्थान स्तर पर भिन्न विषयों के चार वैज्ञानिकों के अनेक समूह बनाकर प्रत्येक वैज्ञानिक समूह द्वारा अपने नियुक्त स्थल के 50 से 100 किलोमीटर के दायरे में स्थित स्वयं अपने या अन्य किसी गाँव का चयन कर तकनीकी प्रसार का कार्य करना है। प्रत्येक वैज्ञानिक समूह द्वारा पांच गाँव अंगीकृत किए जाएंगे। विश्वविद्यालय/संस्थान के स्तर पर वैज्ञानिकों द्वारा सितम्बर 2015 तक एक गाँव का चयन करने की प्रक्रिया पूरी की जानी अपेक्षित है। स्थानीय स्तर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, पंचायत एवं अन्य विभाग चयनित गांवों में वैज्ञानिक समूहों को आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान कर सकते हैं। वैज्ञानिक समूहों को उनकी यात्रा एवं कार्यक्रमों के आयोजन हेतु संस्थान मद से न्यूनतम आवश्यक सहायता प्रदान की जा सकती है। चयनित गाँव की कृषि, जलवायु, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति के विश्लेषण हेतु एक प्रारूप विकसित किया गया है। इसका प्रयोग करते हुए गाँव का बेंचमार्क सर्वे किया जायेगा और संस्थान स्तर पर संकलित रिपोर्ट सम्बन्धित क्षेत्रीय परियोजना निदेशक को प्रेषित की जाएगी।

गाँव में वैज्ञानिकों के कार्य

1. एक गाँव का चयन कर कृषकों से संवाद स्थापित करना।
2. किसानों का सामयिक रूप से फोन एवं मोबाइल संदेश द्वारा कृषि क्रियाओं की जानकारी पहुंचाना।
3. गाँव की परिस्थितियों के अनुसार सम्भावित कृषि प्रणाली पर मौसम के अनुसार कृषि साहित्य उपलब्ध कराना।
4. किसानों को कृषि निवेश, ऋण, बीज, उर्वरक, रसायन, कृषि यंत्र, कृषि जलवायु, बाजार आदि से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना।
5. कृषि वैज्ञानिक द्वारा समाचार पत्रों, सामुदायिक रेडियो आदि के माध्यम से भी क्षेत्र विशेष में किसानों को जागरूक कराना।
6. स्थानीय स्तर पर किसानों के लिए कार्यरत संगठनों एवं संस्थाओं जैसे स्वयंसेवी संस्थाओं, कृषक संगठन, आत्मा, अन्य सरकारी विभागों व उनके कार्यक्रमों के बारे में कृषकों को अवगत कराना।
7. राष्ट्रीय महत्त्व के संवेदनशील मुद्दों जैसे स्वच्छ भारत अभियान, जलवायु परिवर्तन जल संरक्षण मृदा उर्वरता आदि विषयों पर भी किसानों को समय-समय पर जागरूक करना।
8. आवश्यकतानुसार चयनित सम्पर्क गाँव का भ्रमण कर किसानों की बैठक आयोजित करना एवं संबंधित संस्थानों से विशेषज्ञों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
9. वैज्ञानिकों द्वारा ग्रामीण स्तर पर तकनीकी समस्याओं की पहचान कर आगामी अनुसंधान कार्यक्रमों में उपयोग।
10. गाँव से सम्बन्धी तकनीकी, सामाजिक व आर्थिक आंकड़े सृजित करना व किए गए कार्यों की तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

क्रियान्वयन

प्रत्येक विश्वविद्यालय/संस्थान स्तर पर एक वरिष्ठ वैज्ञानिक को नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जाएगा। क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय परियोजना निदेशक, नोडल अधिकारी होंगे, जिनके पास गाँव के बेंचमार्क सर्वे तथा त्रैमासिक रिपोर्ट विश्वविद्यालय/संस्थान के नोडल अधिकारी द्वारा भेजी जाएगी। क्षेत्रीय परियोजना निदेशक को संकलित रिपोर्ट सहायक महानिदेशक (कृषि प्रसार) को भेजनी होगी, जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय स्तर पर नोडल अधिकारी का कार्य करेंगे।

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान,
करनाल के विभिन्न दलों द्वारा
'मेरा गाँव मेरा गौरव' कार्यक्रम के अन्तर्गत
चलाई जा रही गतिविधियाँ

दल : 1

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. सत्यवीर सिंह	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि विस्तार	बकाना	यमुनानगर
डॉ. ए. एस. खरब	प्रधान वैज्ञानिक	मृदा विज्ञान	छोटा बाँस	यमुनानगर
डॉ. रिंकी	वैज्ञानिक	पादप कार्यिकी	चमरोड़ी	यमुनानगर
डॉ. कैला । प्रजापत	वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	जुबल	यमुनानगर
			पलाका	यमुनानगर

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

यमुनानगर के बकाना, छोटा बाँस, चमरोड़ी, जुबल और पलाका गाँवों में “मेरा गाँव मेरा गौरव” कार्यक्रम की शुरुआत अक्टूबर, 2015 में हुई। मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम के विषय में इन गाँवों में जानकारी दी गई और साथ ही आधारभूत आंकड़े भी एकत्रित किए गए।

नवंबर, 2015 में बकाना, छोटा बाँस एवं पलाका गाँवों में मिट्टी के नमूने लिए गए और उनका विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के आधार पर ‘मृदा स्वास्थ्य कार्ड’ वितरित किए गए साथ ही किसानों को उर्वरक की उचित मात्रा डालने की सलाह दी गई। पाँचों गाँवों में 10 हैक्टर क्षेत्रफल में गेहूँ के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए। प्रदर्शनों में गेहूँ की नई किस्म डब्ल्यू. एच. 1105, जीरो टिलेज एवं जैव उर्वरक शामिल किए गए।

दिसम्बर, 2015 के अंत में ‘जय जवान जय विज्ञान’ सप्ताह (23–29 दिसम्बर) मनाया गया और किसानों के लिए इस दौरान जागरुकता अभियान भी चलाए गए। किसानों को पीला रतुआ रोग प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गई और इससे संबंधित प्रकाशन भी दिए गए।

गेहूँ एवं जौ उत्पादन पर ज्ञान संवर्धन एवं बेहतर खेती के लिए समय-समय पर विस्तार प्रकाशनों का वितरण किसानों के बीच किया गया। 5 दिसंबर, 2015 को ‘विश्व मृदा दिवस’ के अवसर पर संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में इन गाँवों के किसानों को भी आमंत्रित किया गया।

3 फरवरी, 2016 को एक कृषि जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन बकाना गाँव में किया गया।

9 फरवरी, 2016 को भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के स्थापना दिवस के अवसर पर किसानों ने भागीदारी दर्ज की।

बकाना गाँव में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन स्थल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया।

‘अनाज का सुरक्षित भंडारण’ नामक विषय पर बकाना गाँव में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

छोटा बाँस गाँव में ‘गेहूँ-धान फसल चक्र में सब्जी फसलों का उत्पादन’ नामक विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

किसानों से संबंधित सभी कार्यक्रमों में राज्य कृषि विभाग, हरियाणा का सराहनीय योगदान रहा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, दामला, यमुनानगर ने लगातार सहयोग दिया।



दल : 2

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. अनुज कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि विस्तार	जड़ोली कलां	करनाल
डॉ. आर. के. भार्मा	प्रधान वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	जड़ोली खुर्द	करनाल
डॉ. जोगेन्द्र सिंह	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	नबीपुर	करनाल
डॉ. सेंदिल कुमार के.एम.	वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	खराजपुर	करनाल
			महमूदपुर	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों का सर्वेक्षण कर आधारभूत आंकड़े इकट्ठे किए गए।

फसल अवशेष प्रबंधन व उसे नहीं जलाने के लिए एक जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

सभी गाँवों से मिट्टी के नमूने लिए गए तथा उनका विश्लेषण कर 5 दिसम्बर, 2015 को 'विश्व मृदा दिवस' के अवसर पर किसानों को 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' वितरित किए गए।

सभी गाँवों में पूरे फसल सत्र के दौरान विस्तार बुलेटिन, विस्तार कार्ड व अन्य प्रकाशनों के माध्यम से किसानों का ज्ञान संवर्धन समय-समय पर किया गया।

गन्ने का क्षेत्र होने के कारण गेहूँ की देरी से बोई जाने वाली प्रजातियों (डी.बी.डब्ल्यू. 90, डी.बी.डब्ल्यू. 71 एवं डी.बी.डब्ल्यू. 16) के एक-एक एकड़ के प्रदर्शनी प्लॉट लगाए गए। किसान गेहूँ की डी.बी.डब्ल्यू. 71 प्रजाति के प्रदर्शन से काफी संतुष्ट थे।





दल : 3

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. अनिल खिप्पल	वरिष्ठ वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	हजवाना	कैथल
डॉ. चुनी लाल	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	रसीना	कैथल
डॉ. दिनेश कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	जैव रसायन	यारा	कुरुक्षेत्र
डॉ. पूनम जसरोटिया	वरिष्ठ वैज्ञानिक	कीट विज्ञान	छपार	कुरुक्षेत्र
डॉ. मामुथा एच. एम.	वैज्ञानिक	पादप कार्यिकी	जंधेड़ी	कुरुक्षेत्र

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों के आधारभूत आंकड़े इकट्ठे किये गए।

गेहूँ एवं जौ उत्पादन से संबंधित तरह-तरह के जागरुकता अभियान आयोजित किए गए।

इन गाँवों से मृदा के नमूने लिए गए तथा उनका विश्लेषण कर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' किसानों में वितरित किए गए। हजवाना गाँव में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। किसानों को वैज्ञानिक तरीके से गेहूँ, जौ एवं सब्जियों की खेती की जानकारी दी गई। साथ ही फसल अवशेष न जलाने की सलाह दी गई ताकि पर्यावरण की सुरक्षा भली भांति हो सके। किसानों को इस बात से भी आगाह किया गया कि वे कीटनाशकों, खरपतवारनाशियों एवं रसायनिक उर्वरकों का अत्यधिक मात्रा में प्रयोग न करें। संरक्षण कृषि को बढ़ावा देने व इस विधि को अधिकाधिक किसानों तक पहुंचाने के लिए एक प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। सभी किसानों ने इन पर्यावरण हितैशी तकनीकों को अपनाने में रुचि दिखाई।





दल : 4

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. आर. एस. छोकर	प्रधान वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	बड़ा गाँव	करनाल
डॉ. आर. के. गुप्ता	प्रधान वैज्ञानिक	गुणवत्ता एवं आधारभूत विज्ञान	घीड़	करनाल
डॉ. प्रदीप शर्मा	प्रधान वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	लंडोरा	करनाल
श्री गोपाल रेड्डी के.	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	सिद्धपुर	करनाल
			पूजम	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों के आधारभूत आंकड़े एकत्रित किए गए।

गुल्ली डंडा की प्रतिरोधकता को ध्यान में रखते हुए अंगीकृत गाँवों में जागरुकता अभियान द्वारा इसके समुचित प्रबंधन की विधियाँ किसानों को बताई गई।

मिट्टी के नमूने लिए गए और उनका विश्लेषण कर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' किसानों में वितरित किए गए।

धान व गन्ना में फसल अवशेष प्रबंधन के परिपेक्ष्य में 'बड़ा गाँव' नामक गाँव में धान की पुआल में 'टर्बो हैप्पी सीडर' से गेहूँ की बीजाई तथा गन्ने की पत्तियों में रोटरी डिस्क ड्रिल से गेहूँ की सीधी बीजाई को दिखाने के लिए प्रदर्शनी प्लॉट लगाए गए तथा कटाई के समय आस-पास के गाँवों के किसानों को एकत्रित कर तकनीक के बारे में प्रक्षेत्र दिवस के माध्यम से जानकारी दी गई।





दल : 5

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. संजय कुमार सिंह	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	माजरा रोड़ान	करनाल
डॉ. विनोद तिवारी	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	सीतामाई	करनाल
डॉ. एस. सी. त्रिपाठी	प्रधान वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	कोयर	करनाल
डॉ. सेंधिल आर.	वैज्ञानिक वरिष्ठ वेतनमान	कृषि अर्थशास्त्र	मोहड़ी	करनाल
			सग्गा	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

चयनित गाँवों के आधारभूत आंकड़े इकट्ठे किए गए।

माजरा रोड़ान, सीतामाई, कोयर, सग्गा एवं मोहड़ी गाँवों में फसल अवशेष प्रबन्धन विषय पर जागरुकता अभियान चलाए गए।

किसानों को उर्वरकों का सही मात्रा में प्रयोग एवं खरपतवार नियंत्रण पर जानकारी दी गई।

मिट्टी के नमूने लिए गए एवं उनका वि. लेशन कर के 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का वितरण गाँवों में किया गया तथा गेहूँ उत्पादन से संबंधित प्रकाशनों का वितरण भी किसानों के बीच किया गया।

किसानों को नई तकनीकों की जानकारी द्वारा गेहूँ उत्पादन बढ़ाने के गुर भी सिखाए गए।





दल : 6

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. लोकेन्द्र कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	जाजनपुर	कैथल
डॉ. डी. मोहन	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	सिकंदर खेड़ी	कैथल
डॉ. रेखा मलिक	प्रधान वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	चंदाना	कैथल
डॉ. चरण सिंह	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	संघोर	कुरुक्षेत्र
			मंगोली जाटान	कुरुक्षेत्र

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

इस कार्यक्रम के तहत कैथल जिला से तीन गाँव तथा कुरुक्षेत्र जिला से दो गाँवों का चयन करके आधारभूत आंकड़े एकत्रित किए गए। संघोर व मंगोली जाटान गाँवों से मृदा के नमूने लिए गए तथा उनका विश्लेषण कर किसानों के बीच 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' वितरित किए गए। संरक्षण कृषि को लोकप्रिय बनाने के लिए सिकंदर खेड़ी गाँव में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 50 किसानों ने भाग लिया। किसानों को गोहूँ, जौ एवं सब्जियों की वैज्ञानिक तरीके से खेती की जानकारी दी गई। धान की पराल न जलाने व साथ ही पर्यावरण को बचाने के जागरुकता कार्यक्रम भी इन गाँवों में चलाए गए। समुचित मात्रा में उर्वरक, सिंचाई एवं दवाईयों आदि के प्रयोग की शिक्षा भी दी गई। किसानों के बीच इस कार्यक्रम को लेकर काफी उत्साह देखने को मिल रहा है।





दल : 7

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. राजकुमार	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	रायपुर जाटान	करनाल
डॉ. सेवा राम	प्रधान वैज्ञानिक	पादप जैव रसायन	शेखपुरा	करनाल
डॉ. सिंधु सरीन	प्रधान वैज्ञानिक	आनुवंशिकी	गगसीना	करनाल
डॉ. स्नेह नरवाल	प्रधान वैज्ञानिक	पादप जैव रसायन	फुरलक	करनाल
डॉ. वनिता पाण्डेय	वैज्ञानिक	पादप जैव रसायन	स्टॉन्डी	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों के आधारभूत आंकड़े एकत्रित किए गए।

सभी गाँवों से मिट्टी के नमूने लिए गए व उनका विश्लेषण कर के इसकी सूचना 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' के माध्यम से किसानों तक पहुँचाई गई।

फैजअलीपुर माजरा गाँव में खरपतवार नियंत्रण एवं पीला रतुआ रोग प्रबंधन पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। महिला किसानों के माध्यम से 'बीज उत्पादन कार्यक्रम' द्वारा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया गया।

इन गाँवों में महिला किसानों को बीज उत्पादन, खरपतवार प्रबंधन, करनाल बंट व पीला रतुआ प्रबंधन व रोगिंग (अवांछित पौधों को निकालना) पर प्रशिक्षण दिया गया।





दल : 8

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. अजय वर्मा	प्रधान वैज्ञानिक	सांख्यिकी	पिंगली	करनाल
डॉ. अरुण गुप्ता	प्रधान वैज्ञानिक	आर्थिक वनस्पति विज्ञान	खेड़ीनरु	करनाल
डॉ. विकास गुप्ता	वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	जाणी	करनाल
डॉ. प्रियंका चन्द्रा	वैज्ञानिक	सूक्ष्मजीव विज्ञान	बीड़ माजरा	करनाल
			चिड़ाव	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों में आधारभूत आंकड़े एकत्रिकरण का कार्य संपादित किया गया। मिट्टी के नमूने लिए गए और उनका विश्लेषण किया गया। जागरुकता अभियान के माध्यम से किसानों को गेहूँ एवं जौ उत्पादन की जानकारी दी गई। संबंधित किसानों को दिनांक 5 दिसम्बर, 2015 को 'विश्व मृदा दिवस' के अवसर पर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का वितरण किया गया।





दल : 9

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. सुधीर कुमार	प्रधान वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान	पतनपुरी	करनाल
डॉ. सोनिया श्योराण	वरिष्ठ वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	हैबतपुर	करनाल
डॉ. कर्णम वेंकटेश	वैज्ञानिक वरिष्ठ वेतनमान	पादप प्रजनन	बुखापुरी	करनाल
			कारसा डोड	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों में आधारभूत आंकड़े एकत्रिकरण का कार्य संपादित किया गया। मिट्टी के नमूने लिए गए और उनका विश्लेषण किया गया। जागरुकता कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को गेहूँ एवं जौ उत्पादन की जानकारी दी गई। संबंधित किसानों को दिनांक 5 दिसंबर, 2015 को 'विश्व मृदा दिवस' के अवसर पर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का वितरण किया गया। पोषण प्रबंधन पर एक विशेष जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।





दल : 10

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. सुभाश कटारे	वरिष्ठ वैज्ञानिक	कृषि कीट विज्ञान	कलवेहड़ी	करनाल
डॉ. बी.एस. त्यागी	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	सुबरी	करनाल
डॉ. सुमन लता	प्रधान वैज्ञानिक	कम्प्यूटर विज्ञान	मोहिउद्दीनपुर	करनाल
डॉ. अनीता मीणा	वैज्ञानिक	मृदा विज्ञान	कुंजपुरा	करनाल
			चुन्डीपुर	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों में आधारभूत आंकड़े एकत्रिकरण का कार्य संपादित किया गया।

मिट्टी के नमूने लिए गए और उनका विश्लेषण किया गया।

जागरुकता कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को गेहूँ एवं जौ उत्पादन की जानकारी दी गई।

संबंधित किसानों को दिनांक 5 दिसम्बर, 2015 को 'विश्व मृदा दिवस' के अवसर पर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का वितरण किया गया।

सभी किसानों को सस्य क्रियाओं, कीट व व्याधि प्रबंधन एवं खरपतवार प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गई।





दल : 11

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. अमित कुमार भार्मा	वरिष्ठ वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	वेदखेड़ी	भामली (उ.प्र.)
डॉ. ज्ञानेन्द्र सिंह	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	डोकपुरा	भामली (उ.प्र.)
डॉ. विश्णु कुमार गोयल	वैज्ञानिक वरिष्ठ वेतनमान	पादप प्रजनन	पावटी खुर्द	भामली (उ.प्र.)
डॉ. अंकिता झा	वैज्ञानिक	कृषि मौसम विज्ञान	बीबीपुर	भामली (उ.प्र.)
			लक्ष्मणपुरा	भामली (उ.प्र.)

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों से आधारभूत आंकड़े लिए गए एवं उनका विश्लेषण किया गया। खेतों से मिट्टी के नमूने लेकर उनका विश्लेषण कर के संबंधित किसानों को 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' वितरित किए गए। गाँवों में जागरुकता कार्यक्रम व किसान वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्रगतिशील किसानों को संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया। किसानों को बीज उत्पादन व नई किस्मों जैसे – एच. डी. 2967, एच. डी. 3086 एवं डी. बी. डब्ल्यू. 88 के अंगीकरण के लिए प्रेरित किया गया। मृदा सेहत एवं व्याधि प्रबंधन (पीला रतुआ) पर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।





दल : 12

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. सुभाश चन्द्र गिल	प्रधान वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	सलारु	करनाल
डॉ. रवीश चतरथ	प्रधान वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	दरड़	करनाल
डॉ. एम. एस. सहारण	प्रधान वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान	रम्बा	करनाल
डॉ. रतन तिवारी	प्रधान वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	संगोहा	करनाल
			संगोही	करनाल

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों से आधारभूत आंकड़े एकत्रित किए गए। मिट्टी के नमूने लिए गए एवं उनका विश्लेषण किया गया। जागरुकता कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को गेहूँ एवं जौ उत्पादन की जानकारी दी गई। संबंधित किसानों को दिनांक 5 दिसम्बर, 2015 को 'विश्व मृदा दिवस' के अवसर पर 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' का वितरण किया गया।





दल : 13

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. राजपाल मीना	वरिष्ठ वैज्ञानिक	सस्य विज्ञान	जागला	लाहौल स्पीति (हि.प्र.)
डॉ. राजेन्द्र सिंह खोखर	प्रधान वैज्ञानिक	कृषि जैव प्रौद्योगिकी	दालंग	लाहौल स्पीति (हि.प्र.)
डॉ. सतीश कुमार	वैज्ञानिक वरिष्ठ वेतनमान	पादप प्रजनन	थोरंग	लाहौल स्पीति (हि.प्र.)
डॉ. सी. एन. मिश्रा	वैज्ञानिक वरिष्ठ वेतनमान	पादप प्रजनन	खंगसर	लाहौल स्पीति (हि.प्र.)
			गोंधला	लाहौल स्पीति (हि.प्र.)

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों से आधारभूत आंकड़े एकत्रिकरण का कार्य संपादित किया गया। समन्वित खरपतवार प्रबंधन एवं पोषण प्रबंधन नामक विशय पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किसानों के लिए किया गया। जौ की किस्मों (वी.एल.बी. 118, बी.एच.एस. 400, बी.एच.एस. 532, एच.यू.बी. 113 एवं यू.पी.बी. 1008) के प्रयोग प्रदर्शन लगाए गए। 'पौध किस्म संरक्षण व कृषक अधिकार अधिनियम' के बारे में किसानों को जागरुक किया गया।





दल : 14

नाम	पद	विशेषज्ञता	गाँव	जिला
डॉ. एस. सी. भारद्वाज	प्रधान वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान	तनसेटा	सोलन (हि.प्र.)
डॉ. हनीफ खान	वरिष्ठ वैज्ञानिक	पादप प्रजनन	बड़ोग	सोलन (हि.प्र.)
डॉ. ओम प्रकाश गंगवार	वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान	ननोग	सोलन (हि.प्र.)
डॉ. प्रमोद प्रसाद	वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान	ब्रह्मना	सोलन (हि.प्र.)
श्री. सिद्धाना सवादी	वैज्ञानिक	जैव प्रौद्योगिकी	रजीना	सोलन (हि.प्र.)
डॉ. पी.एल. क यप	वैज्ञानिक	पादप रोग विज्ञान		

मुख्य गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

सभी गाँवों से आधारभूत आंकड़े एकत्रिकरण का कार्य संपादित किया गया।

बड़ोग गाँव में दिनांक 25 दिसंबर, 2015 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 64 किसानों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में 'देश की खाद्य सुरक्षा में किसानों की भूमिका' पर चर्चा हुई साथ ही सरकार की सहयोगी परियोजनाओं की जानकारी भी किसानों को दी गई। आर्थिक दृष्टि से खेती को लाभकारी बनाने के उपाय भी सुझाए गए। फसल उत्पादन में नई किस्मों के महत्व, खरपतवार नियंत्रण, कीट एवं व्याधि प्रबंधन पर भी किसानों को जानकारी दी गई। गोबर की खाद का प्रयोग तथा संतुलित मात्रा में रसायनिक



उर्वरकों के प्रयोग पर भी प्रकाश डाला गया और उन्हें अपनाने की सलाह दी गई।



मेरा गाँव मेरा गौरव

गाँव की आधारभूत जानकारी (Baseline Information of the Village)

1	वैज्ञानिक का नाम	
2	संस्थान का नाम	
3	चिन्हित गाँव का नाम	
4	डाकघर	
5	ब्लाक	
6	जनपद / जिला	

7. किसान का विवरण :

- (i) कृषि के जुड़े भूमिहीन परिवारों सहित कुल कृषक परिवार : -----
- (ii) महिला अध्यक्षता वाले कृषक परिवार : -----
- (iii) अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कृषक परिवार : -----
- (iv) आदिवासी कृषक परिवार : -----

8. कृषक श्रेणी

क्र.सं.	जोत का आकार	कृषक संख्या	प्रतिशत
i)	छोटा		
ii)	मध्यम		
iii)	बड़ा		
iv)	भूमिहीन		

9. खेती की अवस्थाओं का विवरण

	खेती की स्थिति	क्षेत्रफल (हे.)
i)	कुल खेती योग्य जमीन	
ii)	कुल जमीन	
iii)	फसल सघनता (%)	
iv)	सिंचित	
v)	असिंचित / वर्षा आधारित	
vi)	मृदा का प्रकार	
a)	टाईप-I	
b)	टाईप-II	
c)	टाईप-III	
vii)	स्थलाकृति	
a)	समतल	
b)	पहाड़ी	
c)	तटीय	
d)	अन्य	

10. फसल पद्धति

(i) फसल पद्धति 1-----

(ii) फसल पद्धति 2-----

(iii) फसल पद्धति 3-----

क्र.सं.	मुख्य फसलें / बागवानी / वानिकी	क्षेत्रफल (हे.)	उगाई गयी किस्मे	उत्पादकता	मुख्य समस्याएं
i)					
ii)					
iii)					
iv)					
v)					

11. पशुपालन

क्र.सं.	मुख्य पशुपालन श्रेणी	संख्या	उत्पादकता	मुख्य समस्याएं
i)				
ii)				
iii)				
iv)				
v)				

12. मछली पालन

क्र.सं.	विवरण	
i)	मछली तालाब का क्षेत्रफल एवं संख्या	
ii)	कृषक	
iii)	उत्पादकता कुंतल/हेक्टर	
iv)	मुख्य समस्याएं	

13. चिह्नित किए गए गाँव की मुख्य समस्याएं

क्र.सं.	समस्याओं की श्रेणी	समस्या
i)	सामान्य	
ii)	कृषि	

14. गाँव में काम करने वाले संगठन

क्र.सं.	संगठन का नाम एवं पता	संक्षिप्त गतिविधि एवं प्रभाव
i)		
ii)		
iii)		
iv)		

मासिक/त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट प्रारूप
मेरा गाँव मेरा गौरव
संस्थान का नाम

1 गाँव का दौरा

क्रम संख्या	दिनांक	गाँव का नाम	किसानों की संख्या	उद्देश्य
1				
2				

2 गोष्ठी/बैठकों का आयोजन

क्रम संख्या	दिनांक	गाँव का नाम	प्रतिभागियों की संख्या	उद्देश्य
1				
2				

3 आयोजित प्रदर्शन

क्रम संख्या	दिनांक	प्रदर्शन के प्रकार	प्रदर्शनों की संख्या	किसानों की संख्या
1				
2				

4 मोबाइल आधारित सलाह

क्रम संख्या	कवर किए गए किसानों की संख्या	संदेशों की संख्या	विषय का क्षेत्र
1			
2			

5 प्रदत्त साहित्य सहायता

क्रम संख्या	साहित्य की विषय वस्तु	प्रतियों की संख्या	किसानों की संख्या
1			
2			

6 नई किस्मों के बीज रोपण सामग्री, प्रौद्योगिकी की प्रदत्त सुविधा

क्रम संख्या	फसल/किस्म/प्रौद्योगिकी	किसानों की संख्या	क्षेत्र कवर(हेक्टेयर)
1			
2			

7 प्रमुख समस्याएं/जिसका पता लगाया (एक या दो)

क्रम संख्या	एजेंसी का नाम	लाभान्वित किसानों की संख्या
1		
2		

8 सामान्य जागरूकता बनाई

क्रम संख्या	विषय वस्तु	किसानों की संख्या
1		
2		

9 अन्य विभागों/संगठनों के साथ बनाए गए संबंध

क्रम संख्या	एजेंसी का नाम	लाभान्वित किसानों की संख्या
1		
2		

वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रारूप

'मेरा गाँव मेरा गौरव' के अंतर्गत जोन-1 की संस्थान के अनुसार प्रगति रिपोर्ट

वैज्ञानिकों की टीम की संख्या	वैज्ञानिकों की संख्या	गाँवों की संख्या	ब्लॉकों की संख्या	जिलों की संख्या	बेंचमार्क सर्वेक्षण किया (गाँवों की संख्या)

'मेरा गाँव मेरा गौरव' के अंतर्गत आयोजित की गई गतिविधियां

क्रमांक	गतिविधि का नाम	आयोजित की गई गतिविधियों की संख्या	लाभान्वित किसानों की संख्या
1	टीम द्वारा गाँव का दौरा		
2	इंटरफेस मीटिंग/गोष्ठी		
3	प्रदर्शन		
4	प्रशिक्षण		
5	मोबाइल आधारित परामर्श		
6	साहित्य सहायता प्रदान की		
7	निवेदित (इनपुट) सहायता प्रदान की		
8	जागरूकता पैदा की		

मेरा गाँव मेरा गौरव के अंतर्गत नोडल अधिकारी

क्रमांक	संस्थान का नाम	नोडल अधिकारी का नाम	सम्पर्क नम्बर
1			

मेरा गाँव मेरा गौरव के अंतर्गत गाँवों की सूची

राज्य	जिले का नाम	ब्लॉक का नाम	गाँवों के नाम
1			

आयोजित प्रदर्शनों की सूची

क्रमांक	संस्थान का नाम	आयोजित प्रदर्शनों की सूची
1		

संस्थान प्रदत्त साहित्य सहायता

क्रमांक	संस्थान का नाम	साहित्य सहायता प्रदान की
1		

संस्थान द्वारा प्रदत्त निवेदित (इनपुट) सहायता

क्रमांक	संस्थान का नाम	निवेदित (इनपुट) सहायता प्रदान की
1		

संस्थान द्वारा स्थापित सम्बन्ध (लिंकेज)

क्रमांक	संस्थान का नाम	सम्बन्ध (लिंकेज)
1		

संस्थान अनुसार क्षेत्र जिनमें जागरूकता पैदा की गई

क्रमांक	संस्थान का नाम	क्षेत्र जिनमें जागरूकता पैदा की गई
1		


कृषि एवं सारकारिता विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ
अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001


सॉयल हेल्थ कार्ड

स्वच्छ धरा, जैव हवा

सॉयल हेल्थ कार्ड संख्या: _____
 किसान का नाम : _____
 वैयक्तता : _____ से _____ तक

सॉयल हेल्थ कार्ड		प्रयोगशाला का नाम		संसाधन प्रबंधन अनुभाग, भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001	
किसान का विवरण		सॉयल परीक्षण परिणाम			
नाम	पिता/पति का नाम	क्रमांक	पेरामीटर	परिणाम	इकाई
ग्राम	उप-जिला/तहसील	1	पीएच (pH)		आंकलन
जिला	पिन कोड	2	ईसी (EC)		
आधार संख्या	मोबाइल संख्या	3	जैविक कार्बन (OC)		
सॉयल नमूना विवरण		4	उपलब्ध नाइट्रोजन (N)		
सायल नमूना संख्या		5	उपलब्ध फास्फोरस (P)		
नमूना एकत्र करने की तिथि		6	उपलब्ध पोटैशियम (K)		
सर्वे संख्या		7	उपलब्ध सल्फर (S)		
खसरा सं. /Dag No.		8	उपलब्ध जिंक (Zn)		
खेत का क्षेत्रफल		9	उपलब्ध बोरॉन (B)		
भू-स्थिति (GPS)	अक्षांश : _____	10	उपलब्ध ऑयजन (Fe)		
सिंचित भूमि / वर्षासिंचित भूमि	देशांतर : _____	11	उपलब्ध मैगनीज (Mn)		
		12	उपलब्ध कॉपर (Cu)		

द्वितीयक एवं सूक्ष्म पोषकतत्वों संबंधी सिफारिशें		संदर्भ उपज के लिए उर्वरक सिफारिशों (लैविक खाद के साथ)	
क्रमिक	पेरामीटर	संदर्भ उपज	एन.पी.के. के लिए उर्वरक संयोजन-2
1	सल्फर (S)		
2	जिंक (Zn)		
3	बोरॉन (B)		
4	ऑयजन (Fe)		
5	मैगनीज (Mg)		
6	कॉपर (Cu)		
General Recommendations			
1	लैविक खाद		
2	जैव उर्वरक		
3	सूना/जिप्सम		
International Year of Soils		Healthy Soils for a Healthy Life	
2015			

द्वितीयक एवं सूक्ष्म पोषकतत्वों संबंधी सिफारिशें		संदर्भ उपज के लिए उर्वरक सिफारिशों (लैविक खाद के साथ)	
क्रमिक	पेरामीटर	संदर्भ उपज	एन.पी.के. के लिए उर्वरक संयोजन-1
1	सल्फर (S)		
2	जिंक (Zn)		
3	बोरॉन (B)		
4	ऑयजन (Fe)		
5	मैगनीज (Mg)		
6	कॉपर (Cu)		
General Recommendations			
1	लैविक खाद		
2	जैव उर्वरक		
3	सूना/जिप्सम		
International Year of Soils		Healthy Soils for a Healthy Life	
2015			

मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों का क्रांतिक मान

क्र.सं.	पोषक तत्व	न्यून	मध्यम	उच्च
1	जैव कार्बन (OC) प्रतिशत	<0.40	0.40-0.75	>0.75
2	पीएच मान (Ph)	<6.5	6.5-8.7	>8.7
3	विद्युत चालकता (EC), डेसी साइमन/मी.	<0.8	0.8-2.5	>2.5
4	उपलब्ध नाइट्रोजन (N), कि.ग्रा./है	<280	280 - 560	>560
5	उपलब्ध फॉस्फोरस (P), कि.ग्रा./है.	<10	10 - 25	>25
6	उपलब्ध पोटेशियम (K), कि.ग्रा./है.	<120	120-280	>280
7	उपलब्ध सल्फर (S), कि.ग्रा./है.	<20	20 - 40	>40
8	उपलब्ध जिंक (Zn), मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	<1.0	1.0-3.0	>3.0
9	उपलब्ध आयरन (Fe), मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	<4.5	4.5-9.0.	>9.0
10	उपलब्ध मैंगनीज (Mn), मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	<1.0	1.0-2.0	>2.0
11	उपलब्ध ताम्बा (Cu), मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	<0.2	0.2-1.0	>1.0
12	उपलब्ध बोरॉन (B), मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	0.5	0.5-1.0	>1.0
13	उपलब्ध मोलिब्डिनम (Mo) मि.ग्रा./कि.ग्रा.(पी.पी.एम.)	0.01	0.01-0.05	>0.05

गेहूँ की फसल हेतु किसानों के लिए आवश्यक सुझाव

हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के लिए गेहूँ की फसल के लिए रासायनिक उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा नीचे दी गई हैं:-

नाइट्रोजन 60 कि.ग्रा./एकड़ की दर से तीन बराबर भागों (एक तिहाई बीजाई के समय, एक तिहाई पहली सिंचाई पर यानी बीजाई के 21-25 दिन बाद और एक तिहाई दूसरी सिंचाई पर यानी बीजाई के 40-45 दिन बाद गेहूँ की फसल में दें।

फॉस्फोरस की पूरी मात्रा यानी 24 कि.ग्रा./एकड़ की दर से बीजाई के समय डालें।

पोटेशियम की पूरी मात्रा यानी 16 कि.ग्रा./एकड़ (25 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटेश) की दर से बीजाई के समय डालें।

सल्फर एवं सूक्ष्म तत्वों को आवश्यकतानुसार यदि कमी हो तो ही डालें।

जिंक डालने के लिए जिंक सल्फेट 10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से बीजाई के समय डालें।

लोहा डालने के लिए आयरन सल्फेट 10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से बीजाई के समय डालें।

मैंगनीज डालने के लिए मैंगनीज सल्फेट 10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से बीजाई के समय डालें।

ताम्बा डालने के लिए कॉपर सल्फेट 10 कि.ग्रा./एकड़ की दर से बीजाई के समय डालें।

उपरोक्त सभी सूक्ष्म तत्वों वाले पदार्थ सल्फर से भी भरपूर होते हैं, इसलिए अलग से सल्फर डालने की आवश्यकता नहीं होती है।

यदि सूक्ष्म पोषक तत्वों को बीजाई के समय न डाला गया हो और फसल में उनकी कमी दिखाई दे तो उपरोक्त सभी सूक्ष्म तत्वों वाले पदार्थों का 0.5 प्रतिशत का घोल बनाकर बीजाई के 35 एवं 55 दिन बाद स्प्रे करें।

